वार्तालाप सी.डी. नं. 302, ता–24.4.07, दौंड
Disc.CD No.302, dated 24.04.07 at Daund

समय–00.00 (starting)
जिज्ञासू – बाबा, कहते हैं सुबह–सुबह जो स्वप्न देखते हैं वो सच होता है।
बाबा – स्वप्न की वेला भी होती है। सात्विक अमृतवेले में जो स्वप्न देखा जाता है वो सच भी होता है; लेकिन अपनी अवस्था की भी बात है। बहुत अच्छा पुरूषार्थ करता है, अच्छे पुरूषार्थी को अमृतवेला स्वप्न आता है तो सच्चा भी हो सकता है। उसकी निशानी है कि उठने के बाद आँख खुलेगी तो बहोत खुशी रहेगी; परन्तु इन बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए। स्वप्न और साक्षात्कार ये भक्तिमार्ग की निशानी है। ऐसे नहीं स्वप्न अच्छा हो गया, साक्षात्कार अच्छा हो गया तो बस हमारी प्राप्ति हो गई। नहीं । अच्छा पुरूषार्थ करेंगे तो अच्छे ते अच्छी प्राप्ति करेंगे । यज्ञ के आदि में बहुतों ने अच्छे 2 साक्षात्कार किए। साक्षात्कार करने वालों ने क्या स्वर्ग का अनुमान भी लगा पाया? अनुमान भी नहीं लगा पाया।

समय–7.45
जिज्ञासू – बाबा, बाबा मुरली में कहते हैं कि बिन्दी भी लगाना भक्तिमार्ग की निशानी है। अभी तो छोड़ सकते हैं; लेकिन लोग कहते है कि आप बिन्दी भी नहीं लगाते। क्या ऐसा है तुम्हारा ज्ञान?
बाबा – वो तो ये भी कहते हैं कि आप अपने बच्चों की शादी भी नहीं कराते हैं। क्या ऐसा है तुम्हारा ज्ञान?
जिज्ञासू – तो जवाब क्या देना है?
बाबा – वो लोग तो बहुत कुछ कहते हैं। वो लोग जितना जो कहते जाएं वो सब हम धारण करते जाएं?
जिज्ञासू – नहीं।
बाबा – फिर समाज का मुकाबला तो करना ही है ना। समाज में तो ढेर सारी कुरीतियाँ हैं। अरे, ऋषियों–मुनियों ने बिन्दी और टीका लगाने की प्रथा इसलिए डलवाई कि हम एक दूसरे को याद रखें कि हम आत्मा हैं,बिन्दी हैं। आत्मिक स्थिति में हमें टिकना है इसलिए टीका लगाओ। इसलिए उन्होंने ये परम्परा थोड़े ही चलाई थी कि हम परम्परा का पालन करें और जो उसका मूल तन्त है वो भूल जाएं।
जिज्ञासू – बाबा जो ये बिन्दी टिका नहीं लगाते, चूड़ी नहीं पहनते वो मुसलमान.....
बाबा – आपको थोड़े ही पता कि हम अन्दर से बिन्दी लगाए हुए हैं। अन्दर से हम स्मृति में टिके हुए हैं। अन्दर से स्मृति में टिकना, आत्मिक स्थिति में टिकना वो ज्यादा अच्छा है या बाहर का टीका लगाना ज्यादा अच्छा है। (अंदर का) जब समझाएंगे तभी तो उनके समझ में आएगा।
जिज्ञासू – वो कहते हैं मुसलमान, क्रिश्चियन बिन्दी नहीं लगाते, चूड़ी नहीं पहनते हैं।
बाबा – वो सही बात है कि भगवान जब आता है तो जो मुसलमान धर्म वाली आत्माएँ हैं, क्रिश्चियन धर्म वाली आत्माएँ हैं वो आत्मिक स्थिति में टिक नहीं पाती हैं। वो कुछ न कुछ देहभान में आ जाती हैं। अपने 2 धर्म गुरूओं के चक्कर में फँस जाती हैं। इसलिए वो पक्की आत्मा नहीं बन पाती। इसलिए बिन्दी या टीका नहीं लगाती। भारतवासी ही देवी–देवता सनातन धर्म के पक्के हैं। कितने? नौ लाख। जो पक्का2 आत्मिक स्थिति का टीका लगाते हैं और पूरे 84 जन्म भी लेते हैं।
जिज्ञासू – फिर स्थूल लगाना चाहिए या नहीं लगाना चाहिए?
बाबा – दिखावा करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? भारत की परम्परा में दिखावा करना तो अच्छा नहीं है। ज्ञान और योग का दिखावा तो बिल्कुल नहीं करना चाहिए। ये तो गुप्त बात है। जितनी जो चीज़ गुप्त रखेंगे उतना उसमें पावर रहेगी। जितना दिखावा करेंगे तो पावर कम हो जाएगी। जैसे दान है ,दान दूसरों को दिखा–2 के (कि) देखो हम इतना दान दे रहे हैं। तो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

उसकी ताकत खतम हो गई। गुप्त दान महा कल्याण। ऐसे ही कोई भी पुरूषार्थ करें जितना गुप्त पुरूषार्थ करेंगे उतनी उसकी ताकत ज्यादा होगी।

समय–20.48
जिज्ञासू – बाबा ऋषि और मुनि दोनों में क्या फर्क है?
बाबा– ऋषि कहा जाता है पवित्र को और मुनि कहा जाता है मनन–चिंतन–मंथन करने वाले को। जैसे कपिलमुनि। कपिलमुनि को मुनि कहा गया, ऋषि नहीं कहा गया। और नारद को देवऋषि, वो ऋषि कहे गए। जो पवित्र रहते हैं उनको ऋषि कहा जाता है। जो मनन–चिंतन–मंथन ज्यादा करते हैं उनको मुनि कहा जाता है।

समय–56.06
जिज्ञासू – बाबा, शिव बाबा को ज्ञानी तू बच्चे प्यारे हैं। बाबा ने बोला है अनपढ़ माता भी आगे जा सकती है। तो बांधेली माता तो ज्ञान नहीं सुनती है तो वो भी 108 की माला में आ सकती है क्या?
बाबा – जो याद में तीखा होगा वो अंत में ज्ञान में भी तीखा हो जावेगा। धारणा में भी तीखा हो जावेगा। एक याद के बल से सारी शक्तियां आ जाती हैं। (अनपढ़ माता भी?) भले अनपढ़ माता हो तो भी उसमें ज्ञान की पावर, धारणा की पावर और वाईब्रेशन से सेवा करने की पावर सबसे तीखी हो जावेगी।
जिज्ञासू – लेकिन उनमें ज्ञान नहीं है और ज्ञानी तू बच्चे बाबा को प्रिय है।
बाबा – ज्ञान नहीं है ; लेकिन बाप के प्रति प्यार तो होता है, लगाव तो होता है, लगन तो होती है। योग बल से जब विश्व की बादशाही मिल सकती है तो धारणा, सेवा और ज्ञान नहीं मिल सकता?

Time: 00.00 (starting)
Someone said - Baba, it is said that the dreams that we have in the early morning become true.
Baba - There is a time (*vela*) for dreams too. The dreams that are seen in the pure *Amritvela* (predawn period) also turn out to be true, but it is also a matter of one's stage. If someone makes very good efforts, if a good effort-maker has dreams at *Amritvela,* then it can also turn out to be true. Its indication is that when one opens the eyes after waking up, one would feel very happy. But one should not pay much attention to these matters. Dreams and visions are the indications of the path of devotion (*bhaktimarg*). It's not like this that if one has a good dream, if one gets nice divine visions; that is it; we have achieved the attainments. No, if we make good efforts, then we would achieve good attainments/gains. Many people had nice divine visions in the beginning of the *yagya*. Did those who had divine visions, even guess about heaven? They could not even guess.

Time: 7.45
Someone said - Baba - Baba says in the Murli that applying *Bindi* [the vermillion mark on the forehead] is also an indication of the path of worship. Now we can give-up (i.e. stop applying *Bindi*), but people say that you do not even apply *Bindi.* Is your knowledge like this?
Baba replied - They even say that you do not get your children married. Is your knowledge like this?
Someone said - So, what reply should be given?
Baba replied - Those people say many things. Should we keep imbibing [put into practice] whatever those people keep telling?
Someone said - No.
Baba - Then, one has to definitely face the society, shouldn't one? There are so many evil customs/practices in the society. Arey, sages and saints had started the custom of applying *bindi*

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

and *teeka* so that we remember each other as a soul, a point. We have to become constant in the soul conscious stage; that is why apply *teeka*. They did not start the tradition so that we follow the tradition and forget its essence.
Someone said - Baba, those who do not apply *bindi, teeka*, do not wear bangles are Muslims....
Baba – Little indeed do you know that we have applied the *bindi* internally. Internally we are constant in remembrance. Is it better to become constant in remembrance, to become constant in soul conscious stage internally or is it better to apply the external *teeka*? (Someone said - the internal one) they would understand only when you explain them.
Someone said - They say that Muslims, Christians do not apply Bindi, do not wear bangles.
Baba said - That is correct that when God comes, the souls belonging to Muslim religion, the souls belonging to Christianity cannot become constant in the soul conscious stage. They become body conscious to some extent or the other. They get entangled in the trap their own religious gurus. That is why they are unable to become *pakka*, i.e. firm souls. That is why they do not apply *bindi* or *teeka*. Only the residents of India (*Bharatwasis*) are firm in the deity religion. How many? Nine hundred thousand, who apply the *teeka* of firm soul conscious stage and even take complete 84 births.
Someone said - Then should we apply the gross one (i.e. gross *bindi*) or not?
Baba replied - Should one show-off or not? In Indian tradition it is not good to show-off. One should not at all show-off knowledge and *yog* (i.e. remembrance). This is a secret matter. The more secretive something is kept, the more the power it would retain. The more one shows-off, the more the power would decrease. For example, donation; if we donate by showing-off to others that we are donating so much, then its power finishes. There is great benefit/fortune in incognito donation (*gupt daan mahaakalyaan*). Similarly, whatever efforts one makes, the more one makes incognito efforts, the more powerful it would be.

Time: 20.48
Someone asked - Baba, what is the difference between *Rishi* and *Muni*?
Baba replied - A pure one is called *Rishi* and the one who thinks and churns is called *Muni.* Like Kapil Muni. Kapil Muni was called a *Muni*, and not a *Rishi.* And Naarad was called a *Devrishi,* a *Rishi.* Those who remain pure are called *Rishis.* Those who think and churn more are called *Munies.*

Time: 56.06
Someone asked - Baba, Shivbaba likes knowledgeable children. Baba has said that an illiterate mother can also gallop ahead. So, the *bandheli* mother (the mother in bondages) does not listen to the knowledge; so, can she also come in the rosary of 108?
Baba - The one who is sharp in the remembrance would also become sharp in the knowledge in the end. He would become sharp in inculcation (of knowledge) too. All the powers come with the power of remembrance. (Someone asked - even the illiterate mother?) Even if someone were an illiterate mother, she would become the sharpest in the power of knowledge, power of inculcation and the power of doing service through vibrations.
Someone asked - But they do not have knowledge and Baba likes the knowledgeable children.
Baba replied - They do not have knowledge; but there will be love, attachment, devotion for the Father. When the kingship of the world can be obtained through the power of yog, then can't one get inculcation, service and knowledge?

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info